कटिंग लगभग 23 से 25 से0मी0 लम्बी एवं छोटी अंगुली की मोटाई की होनी चाहिए। कटिंग को आई0बी0ए0 5000 पी0पी0एम0 से उपचारित कर फरवरी में लगाना चाहिए। 30 से 45 दिनों में रुटिंग प्राप्त हो जाती है। जुलाई–अगस्त में पौधो को पॉलीथीन थैलों मे प्रत्यारोपित किया जाना चाहिए। इसकी वृद्धि धीमी होती है अतः इसे 2 वर्ष के उपरान्त ही रोपित किया जाना चाहिए।

**उपयोग**

मुख्यतः इसकी पत्तियों का प्रयोग विभिन्न दवाओं व आयुर्वेदिक औषधियों मे किया जाता है। माह अक्टूबर–नवम्बर में जब इसकी पत्तियॉ पीले रंग की हो जाती हैं तो उन्हें एकत्र कर लिया जाता है। हर्बल चाय में भी इसका प्रयोग व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। रोग–प्रतिरोधक क्षमता के विकास में इसका प्रयोग कई प्रकार से किया जाता है तथा मुख्य लाभ निम्न प्रकार हैं –

- फ्री रेडिकल्स के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करता है।
- हृदय सम्बन्धी रोगों से बचाव करता है तथा मानसिक क्षमता में वृद्धि करता है।
- मस्तिष्क को खून, आक्सीजन एवं ताकत प्रदान करने में वृद्धि करता है। सिर में चक्कर आने व दृष्टि दोष को दूर करने में सहायक है।
- पर्यावरणीय टॉक्सीन्स यथा कीटनाशक व शाकनाशक के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करता है।

## विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें :


1– मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण विकास एवं अनुसंधान, हल्द्वानी
मो0 9412076135, 05946–234047
2– वन संरक्षक, अनुसंधान वृत्त, हल्द्वानी
मो0 9411107617, 05946–235136
3– वन वर्धनिक, पर्वतीय, नैनीताल
मो 09411102358, 05942–236270

उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, रामपुर रोड़, हल्द्वानी–263139



अनुसंधान पत्रक 7/2011-12

# जिंको बाइलोबा
# (Ginkgo biloba)

## जिंको बाइलोबा प्रदर्शन क्षैत्र का विकास
(पौध प्रवर्धन तकनीक सहित)


उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी
वन विभाग, उत्तराखण्ड

# जिंको बाइलोबा
## *(Ginkgo biloba)*

### परिचय

जिंको बाइलोबा चीनी मूल प्रजाति का वृक्ष है जो लगभग 30 मी0 तक ऊँचा होता है। आज से 270 मिलियन वर्ष पूर्व जब डायनासोर इस पृथ्वी पर अस्तित्व में थे तब भी यह वृक्ष मौजूद था और आज भी यह वृक्ष एक जीवित जीवाश्म के रूप में इस पृथ्वी पर विद्यमान है। यह महत्वपूर्ण औषधीय गुणों से युक्त वृक्ष है तथा विश्व के अनेक भागों में इसके संरक्षण पर महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। उत्तराखण्ड में भी इस विशिष्ट महत्व की प्रजाति के रोपण का कार्य ऐतिहासिक स्थलों व बंगलों में शोभाकार प्रजाति के रूप में किया गया है।

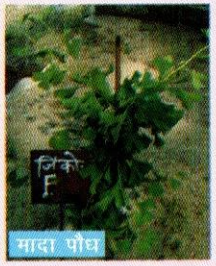


जिंको बाइलोबा एक मोनोटीपिक प्रजाति है अर्थात अपने प्रभाग (Division), वर्ग (Class) एवं कुल (Family) की एक मात्र प्रजाति है। इसके नर व मादा वृक्ष अलग–अलग होते हैं। पत्तियॉ पंखे के आकार की होती हैं जिसमें नसें आधार की ओर से प्रारम्भ होकर पत्ती के मुख्य भाग में बाहर की ओर अलग जाती हैं तथा आपस में एक दूसरे को नहीं काटती हैं।

सामान्यतः नर वृक्ष में पत्तियों के मध्य कटाव अधिक गहरा नहीं होता जबकि मादा वृक्ष की पत्तियों में कटाव अधिक होने के कारण पत्ती दो भागों में स्पष्ट रुप से विभक्त दिखाई देती है। मादा वृक्षों पर पुष्प पहले विकसित होते हैं तथा लगभग 4 माह के पश्चात नर वृक्ष पुष्पित होते हैं। परागण सामान्यतः वायु द्वारा होता है।

### प्रदर्शन क्षेत्र का विकास

उत्तराखण्ड में नर व मादा वृक्ष एक साथ नहीं देखे गये हैं। नर वृक्ष राजभवन परिसर, नैनीताल में है तथा मादा वृक्ष कालिका (रानीखेत), कुमाऊँ विश्वविद्यालय परिसर (नैनीताल), वन मुख्यालय परिसर (नैनीताल), चाय बागान (देहरादून) एवं मंसूरी में विद्यमान हैं। फलस्वरुप उत्तराखण्ड में बीज उत्पादन नहीं पाया गया है। अत्यंत धीमी वृद्धि एवं अवैज्ञानिक विदोहन के कारण वर्धी प्रजनन भी वृहद स्तर पर सम्भव नहीं हो सका है। अतः इसके प्रदर्शन क्षेत्र की स्थापना का कार्य निम्न प्रकार प्रारम्भ किया गया है–

**योजना का नाम** – कैम्पा

**उद्देश्य**–

जिंगो बाइलोबा प्रजाति को संरक्षित व प्रदर्शित करना, इसके औषधीय व व्यवसायिक महत्व के प्रति जागरुकता पैदा करना, नर व मादा पौधों को एक साथ रोपित कर भविष्य में बीज उत्पादन करना तथा वर्धी प्रजनन हेतु रोपण सामग्री उपलब्ध कराना।

**रोपण विवरण** –

नैनीताल–कालाढुंगी रोड़ पर नैनीताल से 8 किमी0 की दूरी पर नैनीताल वन प्रभाग के नगर पालिका–17 व 21 में कुल 1.70 हे0 क्षेत्र में 3मी0 x 3मी0 की दूरी पर 1585 पौधों का रोपण किया गया है जिनमें 146 नर व 1439 मादा पौधे हैं।

**पौध प्रवर्धन विधि**

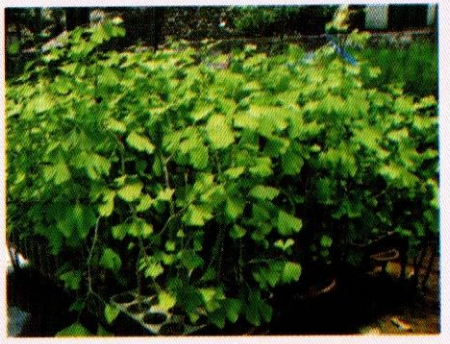

प्रदर्शन क्षेत्र हेतु पौध उत्पादन सड़ियाताल (नैनीताल) एवं कालिका (रानीखेत) नर्सरी में वर्धी प्रजनन द्वारा किया गया। यद्यपि इसकी पौध बीज द्वारा आसानी से उगाई जा सकती है किन्तु उत्तराखण्ड में बीज उत्पादित न होने के कारण इसका प्रवर्धन वर्धी प्रजनन द्वारा ही किया जाता है। कटिंग प्राप्त करने हेतु वृक्ष के लीडिंग शूट को चुनना चाहिए तथा कटिंग लेने के उपरान्त उसके कटे हुये दोनों भाग पर मोम लगा देना चाहिए जिससे कटिंग की नमी बनी रहे। कटिंग को कॉटन बैग में रखना चाहिए तथा कार्य स्थल तक ले जाने हेतु कॉटन बैग को नम रखना चाहिए। कटिंग लगाने के पूर्व उसके निचले भाग से मोम को हटा देना चाहिए। यदि कटिंग को दूर न ले जाना हो तो मोम लगाने की आवश्यकता नहीं होती।